उलामा ए देवबंद और इश्के रसूल ﷺ

मौलाना जुल्फिकार अहमद नक्शबंदी (दब)

खुतबात जुल्फकार फकीर हिन्दी/2 [१५१-१५६]

मजमून का खुलासा हे

ये PDF ग्रामर या कोई भाषा का अदब नहीं है

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

| हज़रत शिबली (रह) और रसूलुल्लाह ﷺ से मुहब्बत

हज़रत शिबली (रह) एक बुजुर्ग गुजरे है. उन्की वफात का वक्त जब करीब आया तो साथियो से फरमाया मुझे वुज़ू करवा दें. साथियो ने बडी मुश्किल से आपको वुज़ू कराया क्योकि आप बीमारी की वजह से काफी कमज़ोर हो चुके थे. वुज़ू के बाद ख्याल आया की मुझसे तो खिलाल रह गया वह है भी सुन्नत. बहुत परेशान हुए. फरमाया अब मुझे दोबारा बुज़ू कराएं तो साथियो ने कहा हज़रत! आप तो माज़ूर है, बीमार है, हरकत से तकलीफ होती है इसलिए रहने दीजिए. लेकिन हज़रत ने फरमाया मुझ पर मौत की तकलीफ तारी है, करीब ही में रसूलुल्लाहﷺ से मिलूंगा तो में यह नहीं चाहता की ऐसे वुज़ू से चला जाउं जिस्मे रसूलुल्लाहﷺ की कोई

सुन्नत छूटी हुई हो. यह होता. सच्चा इश्क.

| उलामा ए देवबंद और इश्के रसूल ﷺ

आप कहेंगे मियां साहाबा किराम (रदी) की बाते बतलाते हो, किसी बाद के ज़माने में की बाते बता देते. आइए में आपको अपने रूहानी बडे बुजुर्गों की ज़िन्दगियो के हालात सुनाता हूं जो दारूल उलूम देवबंद के बानी और फरज़ंद थे ताकि आपको मालूम हो जाए की इन हज़रात को रसूलुल्लाह ﷺ के साथ कैसी मुहब्बत थी.

| हज़रत मौलाना कासिम नानौतवी (रह) का इश्के रसूल ﷺ

हज़रत मौलाना कासिम नानौतवी (रह) को कौन नहीं जानता, वह इल्म के आफताब और माहताब थे, उन्के पीछे अंग्रेज़ लगा हुआ है, चाहता है की जान से मार डालूं, आपको भी पता चल गया, रिश्तेदारो ने कहा हज़रत! आप कहीं छिप जाए ताकि आप बच सके, आपने बात मान ली, लिहाजा छिप गए, अभी तीन दिन ही गुजरे थे की फिर बाहर फिरते नज़र आए, फिर किसी ने कहा जान का मामला है, आपको चाहिए की जरा ओझल रहें, फरमाया की मैंने रसूलुल्लाह ﷺ की हदीस पर नज़र डाली, पूरी

ज़िन्दगी में रसूलुल्लाहﷺ तीन दिन गारे में छिपे नज़र आते है, मैंने इस सुन्नत पर अमल कर लिया, अब बाहर आ गया हूं चाहे मेरी जान ही क्यो न चली जाए. रसूलुल्लाहﷺ अकरम की हदीस है की तुम बेवाओ का निकाह कर दिया करो, कुरान पाक में भी है, हजरत मौलाना कासिम नानौतवी रह की बहन नब्वे साल की उम्र में बेवा हो गई, आपको पता चला, उन्के पास तशरीफ ले गए, कुछ दिन गुज़र गए तो दोबारा अपनी बहन के पास गए और कहने लगे बहन, में तुम्हारे पास एक बात करने आया हूं, बहन ने कहा बताओ भाई क्या बात हैं? हज़रत फरमाने लगे की मेरे आका हज़रत हज़रत मुहम्मदﷺ का फरमान है की तुम बेवाओ का निकाह कर दिया करो, आप मेरी इस बात को मान लीजिए और निकाह कर लीजिए, में जानता हूं की इस उमर में इज़दिवाजी ज़िन्दगी की ज़रूरत नहीं है मगर कासिम नानौतवी को एक सुन्नत की तोफीक हो जाएगी, बहन रोने लग गई, आपने अपनी पगडी को उतारा और बहन के कदमों पर रख दिया और कहा की तुम्हारी वजह से मुझे रसूलुल्लाहﷺ की सुन्नत पर अमल की तौफीक हो जाएगी, लिहाज़ा नब्वे साल की उम्र में अपनी बहन का निकाह कर दिया, कैसा

इश्क था.

हज़रत मौलाना कासिम नानौतवी (रह) जब हज पर गए तो आपने रास्ते में रसूलुल्लाहﷺ की शान में कुछ अश्आर लिखे वह भी सुनाता चलूं "की ऐ अल्लाह के नबी निजात की उम्मीदें तो बहुत है मगर सबसे बडी उम्मीद यह है की मदीने के कुत्तो के साथ मेरा शुमार हो जाए, अगर जियूं तो मदीने के कुत्तो के साथ फिरता रहूं और अगर मर जाऊं तो मदीने के कीडे मकौडे मुझे खा जाए". रसूलुल्लाहﷺ की ऐसी शदीद मुहय्यत थी दिल में.

एक आदमी आपकी खिदमत में आया, उसने सब्ज़ रंग का जूता पेश कर दिया, हज़रत ने वह जूता ले तो लिया मगर उस्को घर में रख दिया, किसी ने बाद में पूछा हज़रत! फलां ने बहुत अच्छा जूता दिया था, इलाके में अक्सर लोग पहनते है, खूबसूरत भी बना हुआ था, फरमाया मैंने जूता ले तो लिया था की उस्की दिलजोई हो जाए मगर पहना इसलिए नहीं की दिल में सोचा की मेरे आका के रौज़ा-ए-अक्दस का रंग भी हरा है, अब में अपने पांव में इस रंग का जूता कैसे पहनु.

आप हरम तशरीफ ले गए, आप बहुत नाज़ुक बदन थे, एक आदमी ने देखा की आप नंगे पांव मदीने की

गलियो में चले जा रहे है और पांव के अन्दर से खून रिसता चला जा रहा है, किसी ने पूछा हज़रत जूता पहन लेते, फरमाया, हां पहन तो लेता लेकिन जब मैंने सोचा की इस दयार में मेरे आकाﷺ चला करते थे तो मेरे दिल ने गवारा न किया की कासिम उस पर जूतो के साथ चला फिरे, कैसे दीवाने और परवाने थे रसूलुल्लाहﷺ के.

| हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही (रह) का इश्के रसूल ﷺ

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही (रह) फकीह-ए-यकत थे. एक आदमी हज से वापस आया और वहां से कुछ कपडा लाया. उसने वह कपडा हज़रत (रह) की खिदमत में पेश किया. हज़रत ने जब उसे लिया तो उसे चूमा और अपने सर के ऊपर रख लिया जैसे बडी इज्ज़त वाली कोई चीझ हो. तलबा बैठे हुए थे. उन्होंने अर्ज़ किया हज़रत! यह तो फलां मुल्क का कपडा है, मदीने के लोग खरीदकर आगे बेचते है. फरमाया तसलीम करता हूं की यह मदीने का बना हुआ नहीं है मगर में तो इसलिए इस्की इज्ज़त करता हूं की उसे मदीने की हवा लगी हुई है.

एक आदमी हज से वापस आया और उसने तीन खजूरे हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही (रह) की

खिदमत में भेजीं. आपको जब मिलीं तो आपने हथेली पर वे खजूरे ऐसे रखीं जैस दुनिया की दौलत आपकी हथेली में सिमट आयी हो. आपने एक शार्गिद को बुलाया और फरमाया की हमारे जो करीबी मिलने जुलने वाले है जरा उन्की फहरिस्त तैयार कर देना. उसने फहरिस्त बनाई तो पचास से ज्यादा नाम हुए. फरमाया इन तीनो खजूरो के इन नामों के बराबर हिस्से कर दो इसलिए उन्के हिस्से किए गए. छोटे-छोटे हिस्से बने. फरमाया की एक-एक हिस्सा मेरे एक-एक दोस्त को दे दो. ऐसा मालूम होता था की जैसे की हीरे और मोती आपके हाथ लग गए है जो अपने दोस्तो को पेश कर रहे है. एक शार्गिद ने कहा हज़रत! इतने छोटे हिस्से से क्या बनेगा? उस्की यह बात सुनकर हजरत का रंग सुर्ख हो गया और फरमाया, मदीने की खजूर हो और तू उस्के हिस्से को छोटा कहे. लिहाज़ा कितने ही दिनो तक उस्से बोलना छोड दिया.

| हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (रह) का इश्के रसूल ﷺ

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी (रह) दारुल उलूम देववंद में पढाते थे और तंख्वाह इतनी थी की मुश्किल से गुज़ारा होता था. जो कुछ मिलता था घर

की ज़रूरियात पर लग जाता था. इसी वजह से हज भी न कर सके मगर दिल में तमन्ना बहुत थी. हत्ता की किताबों में लिखा है की जब हज के दिन शुरू होते थे तो आप को घर के अन्दर चैन नहीं आता था. कभी इधर चले जाते और कभी उधर चले जाते. यहां तक की दस्तरख्वान पर खाना खाते हुए भी जब ख्याल आ जाता तो कहते मालूम नहीं आशिक लोग क्या कर रहे होगे. हज पर जाने वालो को आशिक कहते थे. यह ख्याल आते ही खाना छोड देते और आहे भरने लगते और कहते काश कोई दिन आए की हुसैन अहमद को भी उस जगह की जियारत नसीब हो जाए.

एक दफा रात को सोए हुए थे और आंख खुल गई. उठ बैठे, परेशानी से नींद नहीं आयी. इसी हालत में आसमान की तरफ निगाह उठाकर अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! मालूम नहीं तेरे आशिक क्या कर रहे होगे. काश हुसैन अहमद को भी उन्मे शुमार फरमा लेते. ज़िलहिज्जा के दस दिन आपको यहां आराम नहीं आता था. दुआए मांगते थे, कराहते रहते थे यहां तक की अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने आपकी इस मुहब्बत को कुबूल फरमा लिया और आप के लिए हरम के दरवाजे खोले और अठारह साल तक रसूलुल्लाहﷺ

के पास बैठकर हदीसे पाक का दर्स देते रहे. आशिक ही ऐसा कर सकता है कोई और तो नहीं कर सकता. आप हदीसे मुबारका का दर्स देते वक्त इस अंदाज़ से बैठते थे की मवाजा शरीफ बिल्कुल सामने होता था. हम तो कहते है "काला काला रसूलुल्लाहﷺ" मगर आप जब हदीस पढाते तो फरमाते “काला हाज़ा रसूलुल्लाहु ﷺ".

जब आप तालीम से फारिग हो जाते तो अक्सर लोगों ने देखा की रात के अंधेरे में इशा के बाद या तहज्जुद से पहले अपनी दाढी मुबरक से रसूलुल्लाहﷺ के रोज़ा-ए-अक्दस के करीब की जगह को साफ कर रहे होते थे.

सुब्हानल्लाह ! अल्लाह हमे भी ऐसा इश्क और ऐसा अदब नसीब फरमाए.

किसी ने क्या खूब बात कहीं है "नाज़ा है हुसन जिस पर वह हुस्ने रसूलﷺ है यह कहकशां तो आपके कदमों की धूल है ऐ कारवाने शौक यहां सर के बल चलो तैय्यबा के रास्ते का कांटा भी फूल है"